بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob.9682536974,E-Mail: ansarullah@qadian.in Khulasa Khutba-24.11.2023 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के नियुक्त होने का उद्देश्य एवं ज़माने को सुधारक की आवश्यकता।

मध्यपूर्व ऐशिया में युद्ध के कारण पुनः विशेष दुआओं की प्रेरणा।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 24 नवम्बर 2023, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ أَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने अपने लेख पत्रों एवं अपने उपदेशों में असंख्या स्थानों पर अपने आने का उद्देश्य तथा इस युग में किसी सुधारक के आने की आवश्यकता का बयान फ़रमाया है। यह साबित फ़रमाया है कि आपका अल्लाह तआला की आर से आना पूर्णतः समय की आवश्यकतानुसार था तथा अल्लाह तआला की सुन्नत (मार्ग दर्शन) और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भविष्य वाणियों के अनुसार है, अतः आप फ़रमाते हैं-

सम्पूर्ण तर्क वितर्क के साथ समझाने के लिए मैं यह व्यक्त करना चाहता हूँ कि ख़ुदा तआला ने इस ज़माने को अन्धकारमय पाकर एवं दुनिया को मूर्छित एवं इंकार एवं शिर्क में लिप्त देख कर ईमान एवं सत्यनिष्ठ एवं तक़्वा एवं ईशप्रायणता तो मिटते हुए देख कर मुझे भेजा कि ता वह दोबारा दुनिया में इलमो और अमली तथा नैतिकता और ईमानी सच्चाई को स्थापित करे और ता इस्लाम को उन लोगों के हमले से बचाए जो दर्शन शास्त्र एवं प्रकृतिवाद, अवध का वध करक एवं शिर्क एवं नास्तिकता के लिबास में इस इलाही अभियान को कुछ हानि पहुंचाना चाहते हैं। सो, ऐ हक़ के चाहने वालो! सोच कर देखो कि क्या यह समय वही समय नहीं है जिसमें इस्लाम के लिए आसमानी मदद की आवश्यकता थी। क्या अभी तक तुम पर यह साबित नहीं हुआ कि गत शताब्दी में, जो तेह्रवीं शताब्दी थी, क्या क्या दुःख एवं कष्ट इस्लाम पर पहुंच गए तथा अन्धकार के फैलने से क्या क्या असहनीय पीड़ाएँ हमें उठानी पड़ीं। क्या अभी तक तुमने पता नहीं किया कि किन किन बलाओं ने इस्लाम को घेरा हुआ है। क्या इस समय तुमको यह

जानकारी नहीं मिली कि कितने अधिक लोग इस्लाम से निकल गए, कितने ईसाईयों में जा मिले, कितने नास्तिक एवं प्रकृतिवादी हो गए तथा कितनी अधिक शिर्क एवं नई नई बुराईयों ने तौहीद तथा सुन्नत का स्थान ले लिया और कितना अधिक इस्लाम के रद्द के लिए किताबें लिखी गईं एवं दुनिया में प्रकाशित की गईं, सो तुम अब सोच कर कहो कि क्या अब अनिवार्य नहीं था कि ख़ुदा तआला की ओर से इस शताब्दी पर कोई ऐसा व्यक्ति भेजा जाता जो बाहरी हमलों का मुक़ाबला करता। यदि आवश्यक था तो तुम जानते बूझते इलाही अनुकम्पा को रद्द मत करो तथा इस व्यक्ति से विमुख मत हो जाओ जिसका आना इस शताब्दी पर, इस शताब्दी के लिए उपयुक्त एवं अनिवार्य था तथा जिसकी सूचना आरम्भ से ही नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दी थी।

इसी तरह किसी आने वाले की सच्चाई को जांचने परखने के स्तर को बयान करते हुए आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं-

किसी व्यक्ति के सच्चा होने के लिए यह आवश्यक नहीं कि उसकी खुली खुली ख़बर किसी आसमानी किताब में मौजूद भी है। यदि यह शर्त आवश्यक है तो किसी नबी की नबुव्वत साबित नहीं होगी। वास्तविकता यह है कि किसी व्यक्ति के नबुव्वत के दावे पर सबसे पहले ज़माने की ज़रूरत को देखा जाता है, फिर यह भी देखा जाता है कि वह उपयुक्त समय पर आया कि नहीं, फिर यह भी देखा जाता है कि ख़ुदा ने उसका समर्थन किया है कि नहीं, फिर यह भी देखना होता है कि दुशमनों ने जो आपत्तियाँ उठाई हैं उन आपत्तियों को पूरा पूरा जवाब भी दिया गया है या नहीं।

जब ये सारी बातें पूरी हो जाएँ तो मान लिया जाएगा कि वह इंसान सच्चा है, अन्यथा नहीं। अब साफ़ ज़ाहिर है कि ज़माना अपनी स्थिति से स्वयं याचना कर रहा है कि इस समय इस्लामी मतभेदों को दूर करने के लिए तथा बाहर के हमलों से इस्लाम को बचाने के लिए तथा दुनिया में विलुप्त हो गई आध्यात्मिकता को पुनः स्थापित करने के लिए निःसन्देह एक आसमानी सुधारक की आवश्यकता है जो दोबारा विश्वास से परिपूर्ण करके ईमान की जड़ों को पानी देवे तथा इस तरह से बदी एवं पाप से छुड़ा कर नेकी एवं सत्यनिष्ठा की ओर अग्रसर करे। सो ठीक समय की आवश्यकता अनुसार मेरा आना ऐसा साफ़ है कि मैं सोच नहीं सकता कि पक्षपाती के अतिरिक्त कोई इससे इंकार कर सके, तथा दूसरी शर्त अर्थात यह देखना कि नबियों के द्वारा बताए गए समय पर आया है कि नहीं, यह शर्त भी मेरे आने से पूरी हो गई, क्यूँकि नबियों ने यह पेशगाई की थी कि जब छटा हज़ार पूरा होने को होगा तब वह मसीह प्रकट होगा। सो चांद के हिसाब से छटा हज़ार पूरा होने को है, इसके अतिरिक्त कि हमारे नबी स. ने फ़रमाया था कि हर एक शताब्दी के सिर पर मुजद्दिद आएगा जो दीन को ताज़ा करेगा और अब इस चौधवीं शताब्दी में से इक्कीस वर्ष बीत चुके हैं तथा बाईसवाँ वर्ष जा रहा है। क्या यह इस बात का निशान नहीं कि मुजद्दिद आ गया है।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि ग़ैर लोग मानें या न मानें, हमारे विरोधी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई को स्वीकर करें या न करें परन्तु ये तो स्वयं भी पुकार पुकार कर कह रहे हैं कि इस्लाम में किसी मेहदी और सुधारक की आवश्यकता है जो इस्लाम की नाव को संभाले।

परन्तु जो आया है, पेशगोईयों के अनुसार आया, जो समय की आवश्यकतानुसार आया, उसको मानने को तय्यार नहीं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने केवल दावा पेश नहीं किया बल्कि इस दावे के साथ अंसख्या निशान भी प्रकट किए। एक स्थान पर आप अलै. फ़रमाते हैं कि आज से तेईस वर्ष पूर्व बराहोने अहमदिया में इलहाम मौजूद है कि लोग कोशिश करेंगे कि इस सिलसिले को मिटा दें तथा हर एक चाल चलेंगे परन्तु मैं इस सिलसिले को बढ़ाऊँगा तथा पूरा करूँगा तथा वह एक सेना हो जाएगा तथा क़यामत तक उनका ग़ल्बः रहेगा तथा मैं तेरे नाम को दुनिया के किनारों तक विख्यात कर दूँगा तथा लोग झुंड के झुंड दूर से आएँगे तथा हर एक ओर से धन की सहायता आएगी तथा मकानों को विस्तार दो कि यह तय्यारी आसमान पर हो रही है।

अब देखो, किस ज़माने की यह पेशगोई है जा आज पूरी हुई, जो आँखों वाले हैं इनको देख रहे हैं, किन्तु जो अन्धे हैं उनकी दृष्टि में अभी तक कोई निशान प्रकट नहीं हुआ।

हुज़ूरे अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि आज भी अहमदिया जमाअत की उन्नति तथा लोगों का लाखों की संख्या में जमाअत में शामिल होना, क़ुर्बानियों में बढ़ना, आपकी सच्चाई का प्रमाण है। आज दुनिया का कोई देश ऐसा नहीं जहाँ आप अलैहिस्सलाम का पैग़ाम न पहुंचा हो, जहाँ आप अलै. के पैग़ाम के कारण सत्यनिष्ठ लोगों में इस्लाम की ओर ध्यान न पैदा हुआ हो, बल्कि कई स्थानों पर ऐसी घटनाएँ हइ हैं कि जहाँ अल्लाह तआला ने स्वयं लोगों का मार्ग दर्शन किया तथा वे जामअत में शामिल हुए। विरोधियों के विरोध के बावजूद जमाअत के लोगों में अल्लाह तआला ने ईमान को मज़बूत फ़रमाया तथा फ़रमाता चला जा रहा है। आज भी जो हम ये इलाही समर्थन के दृश्य देख रहे हैं, ये एक अहमदी के लिए ईमान को सुदृढ़ बनाने का साधन है।

इसके उपरान्त हुज़ूरे अनवर ने दुनिया भर से दिव्य स्वभाव लोगों के सत्य का स्वीकार करने तथा ईमान एवं विवेक में उन्नति के विभिन्न वृत्तांत बयान फ़रमाए।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- किस तरह अल्लाह तआला लोगों के दिल इस्लाम तथा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ओर फेर रहा है। कहाँ तो ईसाईयत दुनिया में अपने झंडे गाड़ने की बात करती थी और कहाँ अब ईसाई हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के झंडे तले आ रहे हैं। ये सब देख कर भी इन तथाकथित धर्म के ठेकेदारों की आँखें नहीं खुलतीं तो फिर इनका मामला ख़ुदा तआला के साथ है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के माध्यम से जो अल्लाह तआला इस्लाम के पैग़ाम को दुनिया के कोने कोने तक पहुंचाने के लिए अहमदिया जमाअत के द्वारा काम करवा रहा है, उसने तो इन्शाअल्लाह तआला फैलना है और फूलना है, कोई नहीं जो इस ख़ुदाई काम को रोक सके, किन्तु हर अहमदी को इस बात को भी समझना चाहिए कि केवल हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के

दावे को मान लेना की काफ़ी नहीं है बल्कि हमें अपने अन्दर वे शुभ बदलाव पैदा करने होंगे जो अल्लाह तआला की भेजी हुई शिक्षा का मूल स्वरूप हों, जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत पर चलने का अमली रूप हों, और जब यह होगा तो तब ही हम अल्लाह तआला की कृपाओं के वारिस भी बनेंगे। अल्लाह तआला हमें इसका सामर्थ्य प्रदान करे।

तत्पश्चात हुज़ूरे अनवर ने फ़लिस्तीन के मुसलमानों के लिए दुआ की पुनः तहरीक करते हुए फ़रमाया कि फ़लिसतीनियों के लिए भी दुआएँ करते रहें, अल्लाह तआला उन्हें उस अत्याचार से मुक्ति दे जो उन पर हो रहा है।

कहते हैं कि अब कुछ दिनों के लिए युद्ध विराम है ताकि जीवन के लिए आवश्यक सामग्री की सहायता पहुंच सके परन्तु इसके बाद फिर क्या होगा, सहायता पहुंचा कर फिर मारेंगे उनको। इसराईल की सरकार के इरादे तो भयानक लगते हैं क्यूँकि उनकी सरकार के एक विशेष सलाहकार ने कल पर्सों यह घोषणा की है कि यदि इस युद्ध विराम के बाद फिर तुरन्त युद्ध शुरु नहीं किया गया तो मैं शासन से निकल जाऊँगा, इस प्रकार की तो इनकी सोचें हैं।

बड़ी शक्तियाँ प्रत्यक्षतः बातें तो करती हैं सहानुभूति की, किन्तु न्याय करना नहीं चाहतीं तथा इस समस्या के प्रति गम्भीर ही नहीं हैं। उनको यह पता नहीं, समझते हैं कि वहीं तक सीमित रहेगी, परन्तु जो बुद्धिजीवी हैं उनके, वे कहने भी लग गए हैं कि यह युद्ध केवल उन देशों तक सीमित नहीं रहेगी बल्कि बाहर भी फैलगा तथा उनके देशों तक भी पहुंच जाएगा।

मुस्लिम शासन कुछ बोलना शुरु हुए हैं जिस तरह सऊदी बादशाह ने भी, सुना है, कहा है कि मुसलमानों की एक आवाज़ होनी चाहिए, तो एक आवाज़ बनाना पड़ेगी, इसके लिए ठोस प्रयास करने होंगे। उनको यदि यह आभास हुआ है तो अल्लाह तआला इस भावना को अमली रूप दन की भी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। अतएव दुआओं की ओर अधिक ध्यान दें।

ख़ुत्बः के अन्तिम भाग में हुज़ूरे अनवर ने 5 मृतकों का सद्वर्णन किया तथा जनाज़े की नमाज़ ग़ायब पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई। इनमें मुकर्रम अब्दुस्सलाम आरिफ़ साहब मुरब्बी सिलसिला, मुकर्रम मुहम्मद क़ासिम ख़ान साहब ऑफ़ कैनेडा, पूर्व नायब नाज़िर बैतुल माल ख़र्च। मुकर्रम अब्दुल करीम क़ुदसी साहब, आप जमाअत के विख्यात कवि थे। मियाँ रफ़ीक़ अहमद गोनदल साहब और मुकर्रमा नसीमा लईक़ साहिबा ऑफ़ अमरीका पतनी सय्यद लईक़ अहमद साहब माडल टाउन लाहौर शामिल हैं। हुज़ूरे अनवर ने समस्त मृतकों की मग़फ़िरत तथा दर्जात की बुलन्दी के लिए दुआ की।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔